

﴿فَرَمَانِے مُسْتَفْهِمٌ﴾ : عَلَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर सुजड व शाम दस दस बार दुरेद पाक पढा उसे डियामत के दिन मेरी शक़ाअत मिलेगी. (مجمع الزوائد)

में उस की ँस्लाड इरमाते युनान्चे डउरते बदरुदीन सरडिन्दी इरमाते हैं : “में जवानी के आलम में अकसर ग-ल-बअे डाल की वजड से पढने का जौक न पाता तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ कमाल मेडूरबानी से इरमाते : सबक लाओ और पढो, क्यूंके जालिल सूई तो शैतान का मस्बरा है.” (أَيْضاً ص ۸۹ مُلَخَّصًا)

बेता हो तो जैसा !

डउरते सय्यिदुना मुजद्विडे अल्के सानी تَفْهِمٌ سِرُّهُ التَّوْرَانِي तडसीले ँल्म के बा'द आगरा (अल डिन्ड) तशरीफ़ लाअे और दसों तदरीस का सिख्सिला शुडुअ इरमाया, अपने वक्त के बडे बडे इालिल (उ-लमाअे डिराम) आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ की बारगाड में डालिर डो कर ँल्मो डिकमत के यश्मे से सैराब डोने लगे. जब “आगरा” में काई अर्सा गुडर गया तो वालिडे माजिद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد को आप की याद सताने लगी और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ को देपने के लिये बेयैन डो गअे, युनान्चे वालिडे भोडतरम तवील सडर इरमा कर आगरा तशरीफ़ लाअे और अपने लफ्ते जिरर (या'नी मुजद्विडे अल्के सानी) की जियारत से अपनी आंभें ठन्डी कीं. आगरा के अेक आलिम साडिब ने जब उन से ँस अयानक तशरीफ़ आ-वरी का सबब पूछा तो ँशाद इरमाया : शैष अडमद (सरडिन्दी) की मुलाकात के शौक में यडं आ गया, यूंके बा'ज मजबूरियों की वजड से ँन का मेरे पास आना मुशिकल था ँस लिये मैं आ गया हूं.

(رُبْدَةُ الْمَقَامَات ۱۳۳ مُلَخَّصًا)

करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुज पर दुइद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (عبدالرزاق)

बाप देभे औलाद सवाब क्माअे

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! इरमां बरदार और नेक औलाद आंभों की ठन्डक और दिल का यैन होती है. जिस तरह वालिदैन की मलुब्बत त्मरी नजर के साथ जियारत से औलाद को अेक मकबूल उज का सवाब मिलता है ईसी तरह जिस औलाद की जियारत से वालिदैन की आंभें ठन्डी हों, अैसी औलाद के लिये त्मी गुलाम आजाद करने के सवाब की बिशारत है युनान्घे इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : “जब बाप अपने बेटे को अेक नजर देभता है तो बेटे को अेक गुलाम आजाद करने का सवाब मिलता है.” बारगाहे रिसालत में अर्ज की गई : अगर्घे बाप तीन सो साठ (360) मर्तबा देभे ? ईशाद इरमाया : “अल्लाह उज्रुजल्ल बडा है.” (11708 अदिथ 91/1) (مُعْجَمُ كَبِيرِ ج 1/11708) या'नी उसे सभ कुछ कुदरत है, ईस से पाक है के उस को ईस के देने से आजिज कडा जाअे.

उजरते अल्लामा अब्दुर्रुइफ़ मुनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِيَّةُ इरमाते हें : मुराद येह है के जब अस्ल (बाप) अपनी इर्अ (बेटे) पर नजर डाले और उसे अल्लाह उज्रुजल्ल की इरमां बरदारी करते देभे तो बेटे को अेक गुलाम आजाद करने की मिस्ल सवाब मिलता है. ईस की अेक वजह येह है के बेटे ने अपने रब तआला को राजी त्मी डिया और बाप की आंभों को ठन्डक त्मी पलोंचाई क्यूंके बाप ने उसे अल्लाह उज्रुजल्ल की इरमां बरदारी में देभा है.

(الْتَيْسِير ج 1/131)

मुजदिदे अल्हे सानी का हुल्या मुबारक

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की रंगत गन्दुमी माईल ब सईदी थी, पेशानी कुशादा और येइरअे मुबारक भूब ही नूरानी था. अब्रू दरज, सियाह

करमाने मुस्तकः : على الله تعالى عليه وآله وسلم : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीक पढेगा में कियामत के दिन उस की शकाअत कड़ेगा. (جمع الجوامع)

और बारीक थे. आंभें कुशादा और बडी जब के बीनी (या'नी नाक) बारीक और बुलन्द थी. लब (या'नी डोट) सुर्भ और बारीक, दांत मोती की तरल अेक दूसरे से मिले हुअे और यमकदार थे. रीश (या'नी दाढी) मुबारक पूब घनी, दराज और मुरब्बअ (या'नी चौकोर) थी. आप ह्ने الله تعالى عليه दराज कद और नाजूक जिस्म थे. आप के जिस्म पर मष्पी नहीं बैठती थी. पाउं की अेडियां साफ़ और यमकदार थीं. आप ह्ने الله تعالى عليه अैसे नईस (या'नी साफ़ सुथरे) थे के पसीने से ना गवार भू नहीं आती थी.

(حَصْرَاتُ الْقُدْسِ، دفتر دَوْمِ ص ١٧١ مَلَخَصًا)

सुन्नते निकाह

हजरते सय्यिदुना मुजद्विडे अल्डे सानी फ़ुदस सूरुह तुर्जानी के वालिडे माजिद हजरते शैष अब्दुल अलद झाड़की ह्ने الله تعالى عليه जब आप ह्ने الله تعالى عليه को आगरा (अल हिन्द) से अपने साथ सरहिन्द ले जा रहे थे, रास्ते में जब थानेसर पलोंये तो वहां के रईस शैष सुल्तान की साखिब जादी से हजरते मुजद्विडे अल्डे सानी फ़ुदस सूरुह तुर्जानी का अकडे भस्नून (या'नी सुन्नते निकाह) करवा दिया.

मुजद्विडे अल्डे सानी ह-नई हैं

हजरते सय्यिदुना एमामे रब्बानी, मुजद्विडे अल्डे सानी फ़ुदस सूरुह तुर्जानी सिराजुल अईम्मा हजरते सय्यिदुना एमामे आ'उम अबू उनीफ़ा नो'मान बिन साबित ह्ने الله تعالى عليه के मुकद्लिद होने के सभब ह-नई थे. आप ह्ने الله تعالى عليه सय्यिदुना एमामे आ'उम ह्ने الله تعالى عليه से बे ईन्तिला अकीदत व महब्बत रपते थे. युनान्ये

करमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुददे पाक न पढा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया. (طبرانی)

शाने घमामे आ'उम ज ळबाने मुजदिदे अल्हे सानी

हजरते सय्यिदुना एमामे आ'उम अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की शान बयान करते हुअे फ़रमाते हैं : बुजुर्गों के बुजुर्ग तरीन एमाम, एमामे अजल, पेशवाअे अकमल अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बुलन्दिचे शान के मु-तअद्लिक में क्या लिखूं. आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ तमाम अ'उमअे मुजतहिदीन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ में प्वाह वोह एमामे शाफ़े'ई رَحْمَةُ اللَّهِ تَعालَى عَلَيْهِ हों या एमामे मालिक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ या फ़िर एमाम अहमद बिन हम्बल رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ एन सभ में सभ से बडे आलिम और सभ से जियादा वरअ व तकवा वाले थे. एमामे शाफ़े'ई رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : **يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ يَا أَيُّهَا الْمُنَافِقُونَ يَا أَيُّهَا الْمُنَافِقَاتُ يَا أَيُّهَا الْمُنَافِقَاتُ يَا أَيُّهَا الْمُنَافِقَاتُ يَا أَيُّهَا الْمُنَافِقَاتُ** या'नी तमाम हु-कहा एमाम अबू हनीफ़ा के अयाल हैं.

(مَبْدَأُ وَمَعَادُ ص ६९ مَلْخَصًا)

एजउत व भिलाइत

हजरते सय्यिदुना मुजदिदे अल्हे सानी سُورَةُ التَّوْرَانِي को मुप्तलिफ़ सलासिले तरीकत में एजउत व भिलाइत हासिल थी : **﴿1﴾** सिख्सिलअे सुह्रवदिथ्या कुब्रविथ्या में अपने उस्तादे मोहतरम हजरते शैख या'कूब कश्मीरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से एजउत व भिलाइत हासिल फ़रमा'ई **﴿2﴾** सिख्सिलअे यिशित्या और कादिरिथ्या में अपने वालिदे माजिद हजरते शैख अब्दुल अहद यिशती कादिरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से एजउत व भिलाइत हासिल थी **﴿3﴾** सिख्सिलअे कादिरिथ्या में केथली (मजाइते सरहिन्द) के बुजुर्ग हजरत शाह सिकन्दर कादिरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से एजउत व भिलाइत

इरमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइडे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुज पर दुइडे पाक पढना तुम्हारे लिये पाकीजगी का भाईस है. (ابو يعلى)

हासिल थी ﴿4﴾ सिव्सिलअे नकशबन्दिच्या में उजरते प्वाजा मुहम्मद बाकी बिल्लाह नकशबन्दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से ईजाजत व भिलाइत हासिल इरमाई. (सीरते मुजद्विदे अल्डे सानी, स. 91) उजरते मुजद्विदे अल्डे सानी फुदस सुहु तुरानी ने तीन सिव्सिलों में ईकतिसाबे ईज का यूं जिक इरमाया है : “मुजे कसीर वासितों के जरीअे नबिये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से ईरादत हासिल है. सिव्सिलअे नकशबन्दिच्या में 21, सिव्सिलअे कादिरिया में 25 और सिव्सिलअे यिशित्या में 27 वासितों से.”

(مكتوبات امام ربانی، دفتر سوم، حصہ نهم، مکتوب 87/326)

पीरो मुर्शिद का अ-दबो अेलतिराम (लिकायत)

उजरते सय्यिदुना मुजद्विदे अल्डे सानी फुदस सुहु तुरानी आपने पीरो मुर्शिद उजरत प्वाजा मुहम्मद बाकी बिल्लाह नकशबन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي का बेहद अ-दबो अेलतिराम इरमाया करते थे और उजरत प्वाजा मुहम्मद बाकी बिल्लाह नकशबन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ भी आप को बडी कद्रो मन्जिलत की निगाह से देपते थे. युनान्ये अेक रोज उजरते मुजद्विदे अल्डे सानी फुदस सुहु तुरानी हुजरे शरीफ में तप्त पर आराम इरमा रहे थे के उजरत प्वाजा मुहम्मद बाकी बिल्लाह नकशबन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ दूसरे दरवेशों की तरह तने तन्हा तशरीफ लाअे. जब आप हुजरे के दरवाजे पर पड़ोये तो फादिम ने उजरते मुजद्विदे अल्डे सानी फुदस सुहु तुरानी को बेदार करना याहा मगर आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने सप्तती से मन्अ इरमा दिया और कभरे के बाहर ही आप के जागने का ईन्तिजार करने लगे. थोडी ही देर बा'द उजरते मुजद्विदे अल्डे सानी फुदस सुहु तुरानी की आप

करमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से कजूस तरीन शप्स है. (مسند احمد)

पुली बाहर आउट सुन कर आवाज दी कौन है ? उजरत प्वाज्ज बाकी बिल्लाह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : फ़कीर, मुहम्मद बाकी. आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ आवाज सुनते ही तप्त से मुज़्तरिबाना (या'नी बे करारी के आलम में) उठ अउे हुअे और बाहर आ कर निडायत एज्जो एन्किसारी के साथ पीर साहिब के सामने बा अदब बैठ गअे. (رُبَّةُ التَّمَامَاتِ ص १०३ مَلْحَصًا)

मजारे शरीफ़ पर हाजिरी

उजरते सय्यिहुना मुजदिदे अल्हे सानी قُدَسِ سِرُّهُ النَّوْرَانِي मर्कजुल औलिया लाहोर में थे के 25 जुमादल आबिरा 1012 सि.हि. को आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के पीरो मुर्शिद उजरते सय्यिहुना प्वाज्ज मुहम्मद बाकी बिल्लाह नकशबन्दी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का देहली में विसाल हो गया. येह खबर पडोयते ही आप फ़ौरन देहली रवाना हो गअे. देहली पडोय कर मजारे पुर अन्वार की जियारत की, इतिहा प्वानी और अहले पाना की ता'जियत से इरिग हो कर सरहिन्द तशरीफ़ लाअे.

(اِبْضًا ص १०९-१०८ مَلْحَصًا)

नेकी की दा'वत का आगाज

उजरते सय्यिहुना मुजदिदे अल्हे सानी قُدَسِ سِرُّهُ النَّوْرَانِي ने यूं तो कियामे आगरा के जमाने ही से नेकी की दा'वत का आगाज कर दिया था, लेकिन 1008 सि.हि. में उजरत प्वाज्ज मुहम्मद बाकी बिल्लाह नकशबन्दी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से बैअत के बा'द बा काँठडा काम शुरुअ फ़रमाया. अहदे अकबरी के आबिरी सालों में मर्कजुल औलिया लाहोर और सरहिन्द शरीफ़ में रह कर जामोशी और दूर अन्देशी के साथ अपने काम में

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुज पर दुरद पाढो, के तुम्हारा दुरद मुज तक पडायता है. (طبرانی)

मसइफ़ रडे उस वक्त अलानिया कोशिश करना मौत को द्वा'वत देने के मु-तराद्विफ़ था. जाबिराना और काहिराना हुकूमत के डोते हुअे षामोशी से काम करना ल्मी षतरे से षाली न था लेकिन डउरते मुजद्वे अल्हे सानी قَدَسِ سُوهُ التَّوْرَانِي ने येड षतरा मोल ले कर अपनी कोशिशें ज़री रषीं और हुजुरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मक्की जिन्दगी के इब्तिदाइ दौर को पेशे नउर रषा. जब दौरे जडंगीरी शुइअ हुवा तो म-दनी जिन्दगी को पेशे नउर रषते हुअे डरूमला कोशिश का आगाउ इरमाया. डउरते सय्यिदुना मुजद्वे अल्हे सानी قَدَسِ سُوهُ التَّوْرَانِي ने नेकी की द्वा'वत और लोगों की इस्लाड के लिये मुष्तलिविफ़ उराअेअ इस्ति'माल इरमाअे. आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه ने सुन्नते न-डवी की पैरवी में अपने मुरीदों, षु-लइा और मक्तूढात के उरीअे इस तडरीक को परवान यढाया.

(सीरते मुजद्वे अल्हे सानी, स. 157 मुलम्भसन)

इमाम गजाली के गुस्ताष को डांटा (डिकायत)

अेक मर्तबा अेक शष्स डउरते सय्यिदुना मुजद्वे अल्हे सानी قَدَسِ سُوهُ التَّوْرَانِي के सामने इलासिफ़ा की ता'रीफ़ करने लगा, उस का अन्दाउ अैसा था के जिस से उ-लमाअे किराम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه की तौडीन लाउिम आती थी, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه ने उसे समजाते हुअे इलासिफ़ा के रद में डउरते सय्यिदुना इमाम मुडम्मद बिन मुडम्मद बिन मुडम्मद गजाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى का इरमाने आली सुनाया तो वोड शष्स मुंड बिगाड कर कडने लगा : गजाली ने ना मा'कूल षात कही है, مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ. डउरते सय्यिदुना इमाम मुडम्मद बिन मुडम्मद बिन मुडम्मद गजाली

इरमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के जिक्र और नबी पर दुरुद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गये तो वोह बढबूदार मुदरि से उठे. (شعب الایمان)

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की शान में गुस्ताफ़ाना जुम्ला सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को जलाल आ गया ! इौरन वहां से उठे और उसे डांटते हुअे एशरिद इरमाया : “अगर अहले एल्म की सोहबत का जौक रખते हो तो अैसी बे अ-दबी की बातों से अपनी ज़बान बन्द रખो.” (رَبَّةُ التَّقَامَاتِ ص ۱۳۱)

गुस्ताफ़ का एब्रतनाक अन्जाम (हिकायत)

भीठे भीठे एस्लामी लार्थयो ! किसी भी मुसल्मान की तल्कीर दुन्या व आभिरत दोनों ही के लिये नुकसान देह है लेकिन बुरुगाने दीन की गुस्ताफी की सज़ा बा'ज अवकात दुन्या में ही दी जाती है ताके अैसा शप्स लोगों के लिये एब्रत का सामान बन जाअे. युनान्ये हज़रते सय्यिदुना ताजुदीन अब्दुल वल्हाब बिन अली सुबुकी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं : अेक इकीह (या'नी आदिमे दीन) ने मुजे बताया के अेक शप्स ने इिकहे शाइए के दर्स में हज़रते सय्यिदुना एमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को बुरा लला कहा, मैं एस पर बहुत गमगीन हुवा, रात एसी गम की कैइय्यत में नींद आ गए. प्वाब में हज़रते सय्यिदुना एमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की जियारत हुए, मैं ने बुरा लला कहने वाले शप्स का जिक्र किया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने एशरिद इरमाया : “इिक मत कीजिये, वोह कल मर जाअेगा.” सुबुह जब मैं हल्कअे दर्स में पड़ोया तो उस शप्स को हशशाश बशशाश (या'नी लला यंगा) देखा मगर जब वोह वहां से निकला तो घर जाते हुअे रास्ते में सुवारी से गिरा और जम्मी हो गया, सूरज गुड़ब होने से कबल ही मर गया. (اتحاف السادة للربيدي ج ۱ ص ۱۴)

करमाने मुस्तक। عَمَلُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरेद पाक पढा उस क दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (جمع الجوامع)

शौके तिलावत

उजरते सय्यिदुना मुजद्विडे अल्डे सानी قُدَس سِرُّهُ التُّورَانِي सकर में तिलावते कुरआने करीम इरमाते रहते, बसा अवकात तीन तीन बार बार पारे भी मुकम्मल इरमा लिया करते थे. इस दौरान आयते सजदा आती तो सुवारी से उतर कर सजदेअे तिलावत इरमाते. (رَبْدَةُ التَّقَامَاتِ ص २०७ مُلَخَّصًا)

सुन्नत पर अमल का धन्याम (डिकायत)

उजरते सय्यिदुना मुजद्विडे अल्डे सानी قُدَس سِرُّهُ التُّورَانِي दीगर मुआ-मलात की तरह सोने जगने में भी सुन्नत का भयाल इरमाया करते थे. अक बार २-मजानुल मुबारक के आभिरि अ-शरे में तरावीह के बा'द आराम के लिये बे भयाली में बाई (LEFT) करवट पर लैट गअे, इतने में पादिम पाँउ दबाने लगा. आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْه को अयानक भयाल आया के “दाई (RIGHT) करवट पर लैटने की सुन्नत” छूट गई है. नइस ने सुस्ती दिलाई के भूले से औसा हो जअे तो कोई बात नहीं होती लेकिन आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْه उठे और सुन्नत के मुताबिक दाई (या'नी सीधी) करवट पर आराम इरमा हुअे. आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْه इरमाते हैं : इस सुन्नत पर अमल करते ही मुज पर इनायात, अ-रकात और सिक्सिले के अन्वार का जुहूर होने लगा और आवाज आई : “सुन्नत पर अमल की वजह से आप को आभिरत में किसी किस्म का अजाब न दिया जाअेगा और आप के पाँउ दबाने वाले पादिम की भी मज्दिरत कर दी गई.” (اِيضًا ص १८۰ مُلَخَّصًا)

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! सुन्नत पर अमल

करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर दुरद शरीफ़ पढो, अल्लाह उम्र तुम पर रहमत भेजेगा. (ابن عدی)

की कैसी ब-र-कतें हैं. अगर हम भी सुन्नत के मुताबिक सोने की आदत बना लें तो **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की ब-र-कत नसीब होंगी. ये हम मा'लूम हुवा के नेक बन्दों की पिटमत करना भी बहुत बड़ी सआदत का भाँस होता है.

सोने, जागने के 5 म-दनी कूल

❁ सोने से पहले ये हम दुआ पढ लीजिये : **اللَّهُمَّ بِاسْمِكَ أُمُوتُ وَأَحْيَا** :

तरजमा : ओ अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ! मैं तेरे नाम के साथ ही भरता हूँ और छूता हूँ (या'नी सोता और जागता हूँ). (بخاری ج ६ ص ११६ حدیث १३२०). ❁ सुन्नत यूँ है के “कुत्ब तारे (या'नी शिमाल) की तरफ़ सर करे और सीधी करवट पर सोने के सोने में भी मुँह का'बे को ही रहे.” (इतावा र-जविय्या, जि. 23, स. 385) दुनिया में हर जगह कुत्ब तारा शिमाल की जानिब नहीं पड़ेगा लिहाजा दुनिया के किसी भी हिस्से में सोनें और सर या पाँउ किसी भी सभ्त हों बस “सीधी करवट इस तरह सोनें के येहरा डिब्ले की तरफ़ रहे” सुन्नत अदा हो जायेगी ❁ जागने के बा'द ये हम दुआ पढिये :

तरजमा : **تَمَامُ الْبُحَاयَا أَلَّا** तमाम भूबियां अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के लिये हैं जिस ने हमें मारने के बा'द जिन्दा किया और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है. (بخاری ج ६ ص ११६ حدیث १३२०) बहारे शरीअत जिल्द 3 सफ़हा 436 पर है : (नींद से बेदार हो कर) उसी वक्त पक्का ठंरादा करे के परहेज गारी व तक्वा करेगा किसी को सतायेगा नहीं ❁ नींद से बेदार हो कर मिस्वाक कीजिये ❁ रात में नींद से बेदार हो कर तहज्जुद अदा कीजिये के बड़ी सआदत है. सय्यिदुल मुबल्लिगीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन

इरमाने मुस्तक। عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ मुज पर कसरत से दुरदे पाक पढे बेशक तुमहारा मुज पर दुरदे पाक पढना तुमहारे गुनाहों के लिये मकिरत है. (अिन एसक)

मुसल्लम ने एशरद इरमाया : “इरों के आ'द अइजल नमाज रात की नमाज है.” (मुसल्लम व ११६३ हदथ)

मकिरत की बिशारत

उजरते सय्यिदुना मुजद्वददे अल्के सानी عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने अेक बार तइदीसे ने'मत के तौर पर इरमाया : अेक दिन में अपने रु-इका के साथ बैठा अपनी कमजोरियों पर गौरो इक कर रहा था, आजिजी व इन्किसारी का ग-लभा था. इसी दौरान अ मिस्दाके उदीस : “مَنْ تَوَاضَعَ لِلَّهِ رَفَعَهُ اللَّهُ” या'नी जो अद्लाउ عَزَّوَجَلَّ के लिये इन्किसारी करता है अद्लाउ उसे बुलन्दी अता इरमाता है.”^१ रअ عَزَّوَجَلَّ की तरइ से षिताअ हुवा : “يَا نَبِيَّ أَلَمْ نَكْفُرْ بِكَ بِأَسْوَءِ أَوْبَعِيرٍ وَأَسْوَءِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ” में ने तुम को अषश दिया और इयामत तक पैदा होने वाले उन तमाम लोगों को भी अषश दिया जो तेरे वसीले से बिल वासिता या बिला वासिता मुज तक पड़ोंयें.” इस के आ'द मुजे हुकम दिया गया के मैं इस बिशारत को जाडिर कर दूं. (असरातुल कूदस, दफतरुनुम व १०६ अलख़ा)

सवाअ का तोहइा (इकियात)

उजरते इमामे रबबानी, मुजद्वददे अल्के सानी عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के सइरो उजर के षादिम उजरत हाज्ज उबीअ अउमद इरमाते हैं : उजरते मुजद्वददे अल्के सानी عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के “अजभेर शरीइ” इयाम के दौरान अेक दिन में ने 70 उजार बार कलिअते तय्यिबा पढा और आप عَلَيْهِ تَعَالَى اللَّهُ تَعَالَى की षिदमत में हाजिर हो कर अर्र की : मैं ने 70 उजार बार कलिमा शरीइ

١ شَعَبُ الْإِيمَانِ ج ٦ ص ٢٧٦ حَدِيثُ ٨١٤٠

इरमाने मुस्तक़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज़ पर दुइडे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिफ़ार (या'नी बफ़िश की हुआ) करते रहेंगे. (طبرانی)

पढा है उस का सवाब आप की नज़र करता हूं. आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने झौरन हाथ उठा कर हुआ इरमाई. अगले रोज़ इरमाया : कल जब मैं हुआ भांग रहा था तो मैं ने देखा : फिरिश्तों की झौंज उस कलिमअे तय्यिबा का सवाब ले कर आस्मान से उतर रही है उन की ता'दाद इस कदर ज़ियादा थी के ज़मीन पर पाँउ रहने की जगह बाकी न रही ! आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने मज़ीद इरमाया : इस अत्म का सवाब मेरे लिये निहायत मुफ़ीद साबित हुवा. ईन्ही हाज्ज साहिब رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का बयान है के उजरते मुजहिदे अल्के सानी قَدَسَ سُوهُ التُّورَانِي ने मुज़ से इरमाया : मैं ने जो कुछ बताया उस पर तअज्जुब न करना, मैं अपना डाल भी तुम्हें बताता हूं : मैं रोज़ाना तहज्जुद के आ'द पांच सो मर्तबा कलिमअे तय्यिबा पढ कर अपने मर्दूम बच्चों मुहम्मद ईसा, मुहम्मद इरुफ़ और बेटी उम्मे कुल्सूम को ईसाले सवाब करता था. हर रात उन की इहें कलिमअे तय्यिबा के अत्म के लिये आमादा करती थीं. जब तक मैं तहज्जुद की अदाअेगी के आ'द कलिमअे तय्यिबा का अत्म न कर लेता वोड इहें मेरे ईद गिर्द ईसी तरह चक्कर लगाती रहतीं जैसे बच्चे रोटी के लिये मां के गिर्द उस वक्त तक मंडलाते रहते हैं जब तक उन्हें रोटी न मिल जाअे. जब मैं कलिमअे तय्यिबा का ईसाले सवाब कर देता तो वोड इहें वापस लौट जातीं. मगर अब कस्सते सवाब की वजह से वोड मा'भूर हैं और अब उन का आना नही होता.

(ايضاً ص १० تَلَخَّصًا)

हिंकायत से हासिल होने वाले म-दनी इल

❁ जिन्हों को भी ईसाले सवाब किया जा सकता है ❁ मुर्द

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर अेक दिन में 50 बार दुरुदे पाक पढे क्रियामत के दिन में उस से मुसा-कडा करे (या'नी हाथ मिलावि)गा. (ابن بشكوال)

अपने अजीजो अकारिब और दोस्त अडबाब की तरफ से इसाले सवाब के मुन्तजिर रहते हैं ❁ मुर्दों को सवाब पडोयता है और वोड सवाब पा कर मुत्मर्शन हो जाते हैं ❁ इसाले सवाब करना औलियाअे किराम का तरीका रहा है.

हजार दाने वाली तस्बीह

हजारते हाज्ज हबीब अहमद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد : जिस दिन मैं ने हजारते सय्यिहुना मुजद्विदे अल्के सानी قَدْ سَأَلْتُ سَيِّدَةَ النُّورَانِي को कलिमअे तय्यिबा का सवाब नज़र किया उसी दिन से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपने लिये अेक हजार दाने वाली तस्बीह बनवाई और तन्हाई में उस पर कलिमअे तय्यिबा का विर्द इरमाने लगे. शबे जुमुआ को पास तौर पर मुरीदीन के हमराड उसी तस्बीह पर अेक हजार दुरुद शरीफ का विर्द इरमाया करते.

(حَصْرَاتُ الْقُدْسِ، دَفْتَرُ دَوْمِ ص 96)

बीबी आधशा के इसाले सवाब की हिकायत

ईमामे रब्बानी, हजारते मुजद्विदे अल्के सानी قَدْ سَأَلْتُ سَيِّدَةَ النُّورَانِي इरमाते हैं : पहले अगर मैं कभी जाना पकाता तो उस का सवाब हुजूर सरवरे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ व अभीरुल मुअमिनीन हजारते मौलाअे काअेनात, अलिय्युल मुर्तजा शरे षुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ व हजारते आतूने जन्त फाति-मतुज्जहरा व हजारते ह-सनैने करीमैन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ की अरवाडे मुकदसा के लिये ही पास इसाले सवाब करता था. अेक रात प्वाब में देखा के जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ इरमा हैं. मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की षिदमते बा ह-र-कत में

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : अरोजे कियामत लोगो में से मेरे करीब तर वोह डोगा जिस ने हुन्या में मुज पर जियादा दुरदे पाक पढे होंगे. (त्रुमदी)

सलाम अर्ज किया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मेरी जानिभ मु-तवज्जुह न हुअे और येहरअे अन्वर दूसरी जानिभ डेर दिया और मुज से इरमाया : “में आईशा के घर जाना जाता हूं, जिस किसी ने मुजे जाना भेजना डो वोह (हजरते) आईशा के घर भेजा करे.” उस वक्त मुजे मा'लूम हुवा के आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के तवज्जुह न इरमाने का सबभ येह था के में उम्मुल मुअमिनीन हजरते सय्यि-हतुना आईशा सिदीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को शरीके तआम (या'नी ईसाले सवाभ) न करता था. ईस के आ'द से में हजरते सय्यि-हतुना आईशा सिदीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को अल्के तमाम उम्माहातुल मुअमिनीन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ को अल्के सब अहले बैत को शरीक किया करता हूं और तमाम अहले बैत को अपने लिये वसीला बनाता हूं. (مكتوبات الامام رباني، دفتر دوم حصه ششم، کتاب ۱۸۵ ص ۳۶) अल्लाहु रब्बुल ईज्जत ईज्जल की उन पर रहमत डो और उन के सदके हमारी भे हिसाभ भङ्कित डो.

أَمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

तमाम औरतो में सब से प्यारी बीबी आइशा

भीडे भीडे ईस्लामी भाईयो ! ईस हिकायत से मा'लूम हुवा के जिन को ईसाले सवाभ किया जाता है उन को पडोय जाता है येह भी पता यला, के ईसाले सवाभ महदूद बुजुर्गो को करने के अज्जे सत्मी को कर देना याहिये. हम जितनों को भी ईसाले सवाभ करेंगे सत्मी को बराबर बराबर डी पडोयेगा और हमारे सवाभ में भी कोई कमी न डोगी. ¹

دینہ

1 : मजीद मा'लूमात के लिये मक-त-अतुल मदीना से रिसाला “इतिहा और ईसाले सवाभ का तरीका (सङ्घात 36)” हदिय्यतन हासिल कर के पढिये.

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरुद पढ़ा अल्लाह उस पर दस रक्षमते भेजता और उस के नामसे आ'माल में दस नेकियां लिखता है. (ترمذی)

યેહ ભી પતા ચલા કે હમારે આકા, સરકારે દો આલમ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (ઉમ્મુલ મુઅમિનીન હઝરતે સય્યિ-દતુના આઈશા સિદ્દીકَا رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) સે બેહદ ઉન્સિયત રખતે હેં. “બુખારી” શરીફ કી રિવાયત હે, હઝરતે સય્યિદુના અમ્ર બિન આસ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ જબ “ગઝ્વએ સલાસિલ” સે વાપસ લૌટે તો ઉન્હોં ને અર્ઝ કી : يَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! आप को तमाम लोगों में सब से ज़ियादा महबूब कौन है ? फरमाया : (औरतों में) आइशा. उन्हों ने फिर अर्ज कી : मर्दों में ? फरमाया : इन के वलिये (या'नी हजरते सय्यिदुना अबू बक़ सिदीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ).

(بخاری ج ۲ ص ۱۹ حدیث ۳۶۶۲)

બિન્તે સિદ્દીક આરામે જાને નબી ઉસ હરીમે બરાઅત પે લાખોં સલામ

યા'ની હે સૂરએ નૂર જિન કી ગવાહ ઉન કી પુરનૂર સૂરત પે લાખોં સલામ

(હદાઈકે બખ્શિશ શરીફ, સ. 311)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

વલી વલી કો પહયાનતા હૈ (હિકાયત)

હઝરતે સય્યિદુના મુજદિદે અલ્ફે સાની فِدَيْسُ سُرَّةِ النَّوْزَانِي જિન દિનોં મર્કઝુલ ઔલિયા લાહોર મેં કિયામ પઝીર થે ઉસ દૌરાન એક સબ્ઝી ફરોશ આપ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ کી બારગાહે આલી મેં હાઝિર હુવા. આપ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ ઉસ કી તા'ઝીમ કે લિયે ખડે હો ગએ. ઉસ કે જાને કે બા'દ આપ સે અર્ઝ કી ગઈ : वोह तो सब्जी फरोश था ! (उस की ऐसी ता'जीम ?) ઈશાદ ફરમાયા : वोह अब्दाल (या'नी वलियुल्लाह) हें, ખુદ કો ઘુપાને કે લિયે યેહ પેશા ઈખ્તિયાર કર રખા હૈ. (حَصْرَاتُ الْقُدْس، دفتر دُوم ص ۹۸)

करमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْبُيُوتِ शबे जुमुआ और रोजे जुमुआ मुज पर हुइड की कसरत कर लिया करो जो अेसा करेगा डियामत के दिन में उस का शकीव व गवाड बनूगा. (شعب الایمان)

“सरहिन्द शरीफ़” के नव हुइड की निरर्भत से 9 इरामात

① अेक वक्त में दस घरों में तशरीफ़ आ-वरी (डिकायत)

डउरते सय्यिहुना मुजद्विडे अल्डे सानी शैख अडमद सरहिन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ को दस मुरीदों में से हर अेक ने माडे 2-मजानुल मुबारक में अेक डी दिन ँइतार की दा'वत दी, आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने सभ की दा'वत कबूल इरमा ली, जब गुइडे आइताब का वक्त हुवा तो अेक डी वक्त में सभ के पास तशरीफ़ ले गअे और उन के साथ रोजा ँइतार इरमाया. (جامع كرامات الاولياء للنهباني ج 1 ص 106)

② इौरन बारिश बन्द हो गड (डिकायत)

अेक मर्तबा बारिश बरस रडी थी तो डउरते सय्यिहुना मुजद्विडे अल्डे सानी فَقَدَسَ سِرُّهُ النَّوْرَانِي ने आस्मान की तरइ नउर उठाई और बारिश से ँशाई इरमाया : “इुलां वक्त तक रुक जा !” युनान्चे बारिश उसी वक्त तक थम (या'नी रुक) गई. (ايضاً ج 1 ص 106)

③ ँसे डथी के पाई तले कुयल्वा दिया जाअे (डिकायत)

अेक अमीर जाडे से बादशाड नाराज डो गया और उसे मर्कजुल औलिया लाडोर से सरहिन्द तलब किया. उस के बारे में येड हुकम जारी किया के जैसे डी येड आअे तो ँसे डथी के पाई के नीचे कुयल्वा दिया जाअे. वोड अमीर जादा जब सरहिन्द पडोंया तो डउरते सय्यिहुना मुजद्विडे अल्डे सानी فَقَدَسَ سِرُّهُ النَّوْرَانِي की ँिदमते बा ब-र-कत में डडिर डो कर निडायत डी आजिडी के साथ अपनी नजात के लिये अर्ज गुजार हुवा. आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने कुइ डेर मुरा-कबा किया इर इरमाया :

करमाने मुस्तक। عَلَّمَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर अेक बार दुरुद पढता है अल्वाड उस के विये अेक कीरात अज विभता है और कीरात उहुद पडाड जितना है. (عبدالرزاق)

बादशाह की तरफ से तुम्हें कोई तकलीफ नहीं पड़ोयेगी बल्के वोह तुम पर मेहरबान होगा. उस अमीर जादे ने अर्ज की : आलीजाल ! आप लिख कर दे दीजिये ताके येह तहरीर मेरी तस्कीने कल्बी (या'नी दिल के सुकून) का सामान हो. युनान्ये आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उस की तसल्ली के विये येह तहरीर फरमाया : “येह शप्स बादशाह के गुस्से के भौंफ से यहां आया है लिहाजा इस फकीर ने अपनी जमानत में ले कर इसे इस मुसीबत से रिहाई दे दी.” वोह अमीर जादा जैसे ही बादशाह के दरबार में पड़ोया तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के ईशाद के मुताबिक बादशाह ने उसे देखा तो मुस्कराया और नसीहत के तौर पर यन्द् बातें कहीं और निहायत मेहरबानी के साथ ईन्आमो ईकराम से नवाज कर रुप्सत कर दिया.

(حَصْرَاتُ الْقُدُس، دفتر دُوم من ١٧٠ ملخصاً)

﴿4﴾ बख्ये के बारे में गैबी जबर दी (हिकायत)

हजरते सय्यिदुना मुजद्विदे अल्डे सानी كَيْدَسِ سِرَّةِ التُّورَانِي के अेक अजीज के हां बेटा पैदा तो होता लेकिन छोटी उम्र में ही फौत हो जाता. अेक बार जब बेटा पैदा हुवा तो वोह बख्ये को ले कर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की भिदमते बा अ-र-कत में हाजिर हुवा और सारा माजरा सुनाया और अर्ज की, के हम ने मन्नत मानी है के अगर येह बख्या बडा हुवा तो हम इसे आप की गुलामी में दे देंगे. आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने ईशाद फरमाया : “इस का नाम अब्दुल हक रभो, येह जिन्दा रहेगा और बडी उम्र पायेगा, लेकिन हर माह हजरत प्वाजा बहाउद्दीन नकशबन्द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الصَّمَد की नियाज दिलवाते रहो.” اللَّهُ اَلْحَمْدُ आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के फरमान की

﴿۵﴾ **दिल की बात जान ली !** (हिकायत)

अ-र-कत से वोड अय्या अडी उअ्र को पछोंया. (ایضاً ص ۲۰۰ ملخصاً)

﴿۵﴾ **दिल की बात जान ली !** (हिकायत)

उअरते सय्यिदुना मुजदिदे अल्डे सानी **قَدَسَ سِرُّهُ النَّوْرَانِي** के अक मुरीद का बयान है के मैं छुप कर अरूयून आया करता था और इस बारे में किसी को भी मा'लूम नहीं था. अक दिन मैं आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के डमराड जा रहा था तो आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने मेरी तरफ़ देख कर फ़रमाया : क्या बात है मैं तुम्हारे दिल में तारीकी (या'नी अंधेरा) देखता हूँ ? मैं ने छंकारा किया के मैं छुप कर अरूयून जाता हूँ लेकिन अब इस से तौबा करता हूँ. (ایضاً)

﴿۶﴾ **मांग क्या मांगता है ?** (हिकायत)

अक दिन उअरते सय्यिदुना मुजदिदे अल्डे सानी **قَدَسَ سِرُّهُ النَّوْرَانِي** तन्हाई में तशरीफ़ फ़रमा थे और अक नौ मुस्लिम (या'नी नया मुसल्मान) आप की भिदमते आ अ-र-कत में मौजूद था. आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने उस से फ़रमाया : “मांग क्या मांगता है ? जो मांगेगा वोही मिलेगा.” उस ने अर्ज़ किया : “आलीजाड ! मेरा भाई और वालिदा अपने कुकू में अडी शिदत (या'नी सप्टी) रभते हैं, मेरी अहुत कोशिश के आ वुजूद वोड ईस्लाम कबूल नहीं करते, आप तवज्जोड फ़रमा दीजिये के वोड मुसल्मान हो जाअें.” फ़रमाया : इस के ईलावा कुछ और भी याहिये ? अर्ज़ की : आप की तवज्जोड से मुझे लवाईयां मिल जाअेंगी, लेकिन अल्मी येडी प्वाहिश है के वोड मुसल्मान हो जाअें. फ़रमाया : “वोड अहुत जल्द मुसल्मान हो जाअेंगे.” आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के फ़रमाने के तीसरे दिन

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइडे पढ कर अपनी मजलिस को आरास्ता करो के तुम्हारा दुइडे पढना बरोजे क्रियामत तुम्हारे लिये नूर होगा. (فردوس الاخطار)

उस का भाई और वालिदा दोनों सरहिनद शरीफ आ कर मुशर्रफ ब ईस्लाम हो गये. (ايضاً ص २०३ مُلَخَّصًا) अदलाहु रब्बुल ईज्जत की उन पर रहमत हो और उन के सदके उमारी बे हिसाब मङ्किरत हो.

اٰمِيْنَ بِجَاوِزِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

﴿7﴾ मुरीद की मद्द इरमाई (हिकायत)

उजरते सय्यिदुना मुजद्वददे अल्डे सानी فَدَسِ سُرَّةُ التُّورَانِي के मुरीदे भास सय्यिद जमाल अेक रोज किसी वादी से गुजर रहे थे के अथानक अेक शेर सामने आ गया ! उन के कदम वहीँ जम गये, आनन फानन अपने मुर्शिद उजरते मुजद्वददे अल्डे सानी की बारगाह में अर्ज की : बयाईये ! उसी वक्त उजरते सय्यिदुना मुजद्वददे अल्डे सानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हाथ में असा (STICK) थामे अपने मुरीद की दस्त-गीरी (या'नी मद्द) के लिये तशरीफ ले आये, शेर को असा मारा, जब सय्यिद जमाल साहब ने आंख भोली तो शेर का कहीं नामो निशान न था और उजरते मुजद्वददे अल्डे सानी فَدَسِ سُرَّةُ التُّورَانِي भी तशरीफ ले जा चुके थे.

(رُبَيْدَةُ التَّقَامَات ص २१३ مُلَخَّصًا)

शेरों पे शरफ़ रहते हैं दरबार के कुत्ते शाहों से भी बढ कर हैं गदायाने मुहम्मद

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

﴿8﴾ बद्द अकी-दगी का प्वाब में छलाज इरमा दिया (हिकायत)

अेक शप्स बा'ज सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ बिल पुसूस उजरते सय्यिदुना अभीरे मुआविया رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ कीना रहता

इरमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : शबे जुमुआ और रोजे जुमुआ मुज पर कसरत से दुरद पढे क्यूके तुम्हारा दुरद मुज पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

था. अेक ददन वोल “मकुतूबाते ँमाभे रब्बानी.” का मुता-लआ कर रडल था, के उस भें येड ँबारत पढी : “डजरते सय्यदुना ँमाभे मालक र्छु اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने डजरते सय्यदुना अभीरे मुआविया ر्छु اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को बुरा कडने को डजरते सय्यदुना सिदीके अकबर, डजरते सय्यदुना इरके आ'जम र्छु اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को बुरा कडने के बराबर करार ददया है.” तो वोल आप र्छु اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से रन्जुदा डो गया और (مَعَادُ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ) मकुतूबात शरीफ़ की कडताब जमीन पर इंक ददी. जब वोल शप्स सोया तो डजरते सय्यदुना मुजद्वददे अल्डे सानी فَدَسَ سُرَّةُ النَّوْرَانِي उस के प्वाब भें तशरीफ़ ले आअे. आप र्छु اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ नडायत जलाल भें उस के दोनो कान पकड कर इरमाने लगे : “तू डमारी तडरीर पर अे'ताराज करता और उसे जमीन पर इंकता है ! अगर तू भेरे कौल (या'नी बात) को भो'तबर नडी समजता तो आ ! तुजे डजरते सय्यदुना अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ डी के पास ले यलूं, जिन की भातर तू सडलअे कडराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को बुरा कडता है.” इर आप र्छु اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ उसे अैसी जगड ले गअे जडल अेक नूरानी येडरे वाले बुजुर्ग तशरीफ़ इरमा थे. डजरते सय्यदुना मुजद्वददे अल्डे सानी فَدَسَ سُرَّةُ النَّوْرَانِي ने नडायत आजिजी से उस बुजुर्ग को सलाम कडया इर उस शप्स को नजदीक बुला कर इरमाया : येड तशरीफ़ इरमा बुजुर्ग डजरते सय्यदुना अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ हैं, सुन ! कया इरमाते हैं. उस शप्स ने सलाम कडया, सय्यदुना शेरे प्हुदा र्छु اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उसे सलाम का जवाब देने के बा'द इरमाया : अबरदार ! रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सडलआ से कदूरत (या'नी

इरमाने मुस्तफा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अेक बार दुरेदे पाक पढा अल्लाउ उर पर दस रकमते भेजता है. (مسلم)

रन्जिश) न रभो, धन के बारे में कोई गुस्ताखाना जुम्ला जभान पर न लाओ. फिर उजरते मुजद्वेदे अल्के सानी قَدَسَ سُرَّةُ النَّوْرَانِي की जानिभ धशारा कर के उस से इरमाया : “धन की तहरीर से हरगिज न फिरना (या’नी मुभा-लइत मत करना).” धस नसीहत के भा’द भी उस के दिल से सहाभअे किराम का कीना दूर न हुवा तो मौलाअे काअेनात उजरते सय्यिहुना अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ ने इरमाया : धस का दिल अभी तक साइ नही हुवा. येह इरमा कर उजरते सय्यिहुना मुजद्वेदे अल्के सानी قَدَسَ سُرَّةُ النَّوْرَانِي से थप्पउ रसीद करने का इरमाया, हुकम की ता’भील करते हुअे जूं ही आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने गुदी पर थप्पउ मारा तो दिल से सहाभअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ की सारी कदूरत (या’नी नइरत) धुल गध. जब वोह बेदार हुवा तो उस का दिल सहाभअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ की महलभत से मा’भूर था और आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की महलभत भी सो गुना जियादा भठ युकी थी.

(حَضْرَاتُ الْقُدَس، دفتر دُوم ص ११७ مُلَخَّصًا)

﴿9﴾ अपनी वइत की पहले ही भबर दे दी (हिकायत)

उजरते सय्यिहुना मुजद्वेदे अल्के सानी قَدَسَ سُرَّةُ النَّوْرَانِي ने अपने धन्तिकाल से बहुत पहले ही अपनी जौजअे भोउ-त-रमा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا से इरमा दिया था के मुज पर जाहिर कर दिया गया है के भेरा धन्तिकाल तुम से पहले हो जाअेगा युनान्धे अैसा ही हुवा के आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ उन से पहले विसाल (या’नी धन्तिकाल) इरमा गअे.

(ايضاً ص २०८ مُلَخَّصًا)

भिद्वी का कोना टूटा हुवा पियाला (हिकायत)

सिद्विसलअे आलिय्या नकशबन्धिय्या के अजीम पेशवा उजरते

इरमाने मुस्तफ़ा: صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिंक हो और वोह मुज पर दुरेद पाक न पढे. (त्रमिदी)

सय्यिदुना मुजदिदे अल्हे सानी قُدَسِ سِرُّهُ النَّوْرَانِي ने ओक दिन आम बैतुल भला में लंगी के पास सफ़ाई के लिये गन्दगी से आलूद बडा सा मिट्टी का कोना टूटा हुवा पियाला देभा तो बेताभ हो गअे क्यूंके उस पियाले पर लइज, “अल्लाह” कन्दा था ! लपक कर पियाला उठा लिया और जादिम से पानी का आइताभा (या’नी ढक्कन वाला दस्ता लगा हुवा लोटा) मंगवा कर अपने दस्ते मुबारक से भूभ मल मल कर अखी तरह धो कर उस को पाक किया, फिर ओक सईद कपडे में लपेट कर अदभ के साथ ओंगी जगह रभ दिया. आप مُحَمَّدٌ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ उसी पियाले में पानी पिया करते. ओक दिन अल्लाह عَلَّكَ كَلِّ عَزَّوَجَلَّ की तरफ से आप مُحَمَّدٌ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ को ईल्लाम इरमाया गया : “जिस तरह तुम ने मेरे नाम की ता’जीम की मैं भी दुन्या व आभिरत में तुम्हारा नाम ओंग्या करता हूं.” आप مُحَمَّدٌ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाया करते थे : “अल्लाह عَلَّكَ كَلِّ के नामे पाक का अदभ करने से मुजे वोह मकाम हासिल हुवा जो सो साल की ईभादतो रियाजत से भी हासिल न हो सकता था.” (ایضاً ص ۱۰۶)

सादा कागज का भी अदभ

सिद्विसलअे आलिय्या नकशबन्दिह्या के अजीम पेशवा हजरते सय्यिदुना शैभ अहमद सरहिन्दी अल मा’रुफ़ मुजदिदे अल्हे सानी قُدَسِ سِرُّهُ النَّوْرَانِي सादा कागज का भी अलतिराम इरमाते थे, युनान्चे ओक रोज़ अपने बिघोने पर तशरीफ़ इरमा थे के यकायक बे करार हो कर नीचे उतर आअे और इरमाने लगे : मा’लूम होता है, ईस बिघोने के नीचे कोई कागज है. (رُبَّةُ الْمَقَامَاتِ ص ۱۹۴)

इरमाने मुस्तफ़ा عَلَّمَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जे मुज पर दस भरतभा दुरदे पाक पढे अल्वाह عَلَّمَ उस पर सो रहमतें नाजिल इरमाता है. (طبرانی)

राह यलते हुये कागजात को लात मत मारिये

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! मा'लूम हुवा, सादा कागज का भी अदब है और क्यूं न हो, के इस पर कुरआन व हदीस और इस्लामी भातें लिखी जाती हैं. أَنَّ مُحَمَّدًا لِلَّهِ عَلَيْهِ बयान कर्दा हिकायत में हजरते सय्यिहुना मुजदिदे अल्के सानी قَدَسَ سِرُّهُ النَّوْرَانِي की खुली करामत है के बिछोने के नीचे के कागज का जाहिरि तौर पर बिन देभे पता चल गया और आप नीचे उतर आये ताके गुलामों को भी कागजात के अदब की तरगीब मिले. “बहारे शरीअत” जिहद अव्वल सफ़हा 411 पर है : “कागज से इस्तिन्ज्हा मन्अ है अगर्थे उस पर कुछ भी न लिखा हो या अबू जइल जैसे काकिर का नाम लिखा हो.”

हुइफ़ की ता'जीम की ज़अे

इतावा र-जविय्या शरीफ़ में है : “हमारे उ-लमा तसरीह (या'नी वाजेह तौर पर) इरमाते हैं के नफ़से हुइफ़ काबिले अदब हैं अगर्थे जुदा जुदा लिखे हों जैसे तप्तती या वस्ली (कागज) पर प्वाह उन में कोई बुरा नाम लिखा हो जैसे इरओन, अबू जइल वगैरहुमा ताहम हुइफ़ की ता'जीम की ज़अे अगर्थे इन काकिरों का नाम लाईके इहानत व तज़लील है.” (इतावा र-जविय्या, जि. 23, स. 336) फुह अबू जइल की कोई ता'जीम नहीं के येह तो सप्त काकिर था मगर यूंके लइजे “अबू जइल” के तमाम हुइफ़े तहज्ज (أب وجوه) कुरआनी हैं. इस लिये लिखे हुअे लइज “अबू जइल” के हुइफ़ की (न के शप्से अबू जइल की) इन मा'नों पर ता'जीम है के उस को नापाक या गन्दी जगहों पर डालने और जूते

करमाने मुस्तफ़ः عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर सुबह व शाम दस दस बार दुउदे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शक़ाअत मिलेगी। (مجمع الزوائد)

और ताकत वर छोते हैं, जिस की वजह से अहकाम व एबादात की बज्ज आ-वरी, भुश उख्लूबी के साथ मुम्किन होती है, बुढापे में येह बछारें कहां नसीब ! उस वक्त तो मस्जिद तक जाना भी दुशवार हो जाता है. लूक प्यास की शिदत बरदाश्त करने की भी छिम्मत नहीं रहती, नफ़ल तो कुज्ज इर्ज़ रोज़े पूरे करने भी ल्मारी पड जाते हैं. जवानी अह्लाह عَزَّوَجَلَّ की बहुत बडी ने'मत है, जिसे येह ने'मत मिले उसे एस की कद्र करते हुअे ज़ियादा से ज़ियादा वक्त एबादत व एताअत में गुजारना याहिये, अवकात के अनमोल डीरों को नफ़अ मन्द बनाना याहिये. हकीमुल उम्मत हजरते मुफ़्ती अहमद यार खान رَحْمَةُ الرَّحْمَانِ नकल इरमाते हैं : “जवानी की एबादत बुढापे की एबादत से अइजल है के एबादात का अखल वक्त जवानी है. शे'र

कर जवानी में एबादत काडिली अख़ी नहीं जब बुढापे आ गया कुछ बात बन पडती नहीं है बुढापे भी गनीमत जब जवानी हो चुकी येह बुढापे भी न डोगा मौत जिस दम आ गध वक्त की कद्र करो, एसे गनीमत जानो, गया वक्त फिर हाथ आता नहीं.” (मिरआतुल मनाज्जह, जि. 3, स. 167)

हाकिंजे कुरआन का अहम

अेक मर्तबा अेक हाकिंज साहब हजरते सय्यिदुना मुजद्विदे अल्के सानी قَدَسَ سِرُّهُ النَّوْرَانِي के पास बैठ कर कुरआने करीम की तिलावत कर रहे थे. आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने जब उन की तरफ़ निगाह इरमाई तो देभा के जिस जगह आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ तशरीफ़ इरमा हैं वोह जगह हाकिंज साहब वाली जगह से थोडी गिंयी है. आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरन अपनी निशस्त (या'नी बैठक) नीयी कर दी. (رُبُودَةُ التَّمَامَاتِ ص 190)

इरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ السَّلَامُ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुज पर दुइद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (عبدالرزاق)

मुजदिते अल्हे सानी के 40 मा'मूलात

❁ सफ़र हो या हज्र, सरदी हो या गरमी, आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ आधी रात के बा'द बेदार हो जाते और मस्नून हुआओं पढते ❁ पाबन्दी से तहज्जुद अदा इरमाते और तहज्जुद में तवील किराअत करते ❁ क़िब्ला इ बैठ कर वुजू इरमाते और ❁ वुजू में किसी से मदद न लेते ❁ वुजू में मिस्वाक इरमाते, इरागत के बा'द कातिब (या'नी लिखने वाले) की तरह मिस्वाक क़बी कान पर लगा लेते और क़बी फ़ादिम के सिपुर्द इरमा देते ❁ वुजू के दौरान तमाम सुन्न व मुस्तहब्बात का पूष भयाल इरमाते ❁ आ'जाअे वुजू धोते वक्त और वुजू के बा'द मस्नून हुआओं पढते ❁ नमाज के लिये उम्हा लिबास जैबे तन इरमाते और निहायत वकार के साथ नमाज की अदाअेगी के लिये तय्यार हो जाते ❁ नमाजे इज की सुन्नतें घर में अदा इरमाते ❁ इज के इर्ज मस्जिद में जमाअते क़सीरा (या'नी बहुत बडी जमाअत) के साथ अदा इरमाते ❁ नमाज से इरागत के बा'द मस्नून हुआओं पढते, इर दाई या बाई जानिब रुष इरमा कर हुआ इरमाते और हुआ के बा'द दोनों हाथ येहरे पर इर लेते ❁ नमाज के बा'द जिक्र, तिलावते कुरआने करीम का हल्का काईम करते और इब्तिदाई ताखिबे ईल्मों की तरबियत इरमाते ❁ आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अक्सर फ़ामोश रहा करते ❁ बा'ज अवकात आप पर गिर्या (या'नी रोना) तारी हो जाता और आंफों से सैले अशक रवां हो जाया करता (या'नी पूष रोते) ❁ नमाजे याशत पाबन्दी से अदा इरमाते ❁ आप निहायत ही कम फ़ाना तनावुल इरमाते ❁ फ़ाने से पहले

इरमाने मुस्तक़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ السَّلَامُ : जे मुज पर रोजे जुमुआ दुरइ शरीक पडेगा में कियामत के दिन उस की शफ़ाअत कड़ेगा. (جمع الجوامع)

और बा'द की दुआओं पढते ❀ (दिन में) जाने के बा'द थोड़ी देर के लिये कैलूला इरमाते ❀ अजान सुन कर जवाब देते ❀ नमाजे जोइर के बा'द इर जिके एलाही का डल्का काँम करते, एस के बा'द अेक दो सभक की तदरीस इरमाते ❀ तडिय्यतुल मस्जिद पाबन्दी से अदा इरमाते ❀ नमाजे मगरिब के बा'द अक्वाबीन के छ⁶ नवाइल अदा इरमाते ❀ नमाजे वित्र की अदाअेगी के बा'द सुन्नत के मुताबिक किब्ला रुष डो कर सीधा हाथ दाअें रुषसार के नीये रष कर आराम इरमा डोते ❀ सूरज या थांद ग्रहन डोने पर नमाजे कुसूफ़ व पुसूफ़ अदा इरमाते ❀ आप ﷺ र-मजानुल मुबारक के आबिरी अ-शरे में अे'तिकाइ इरमाते ❀ जुल डिज्जल के एब्तिदाएँ अ-शरे (या'नी शुइअ के दस दिन) में मप्लूक से कनारा कश डो कर एबादत का अेडतिमाम इरमाते ❀ कसरत से दुरइ पाक पढते और पुसूसन शबे जुमुआ मुरीदों के साथ मिल कर अेक डजार दुरइ पाक का नजराना बारगाडे रिसालत में पेश करते ❀ सइरो डजर में तरावीड की मुकम्मल बीस रकअतें पुशूओ पुजूअ से अदा इरमाते ❀ र-मजानुल मुबारक में कम अज कम तीन मर्तबा कुरआने करीम का अत्म इरमाते ❀ आप ﷺ यूके डाइजे कुरआन थे एस लिये अकसर तिलावते कुरआने करीम का सिखिसला ज़री रहता ❀ दौराने सइर भी तिलावत इरमाते और अगर एस दौरान आयते सजदा आ ज़ती तो डौरन सुवारी से उतर कर सजदअे तिलावत अदा इरमाते ❀ एंइरादी नमाज में रुकूअ व सुजूद की तस्बीहात पांय, सात, नव या ग्यारड मर्तबा तक अदा इरमाते ❀ सइर के लिये अकसर आप पीर या

इरमाने मुस्तका : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुज पर दुरदे पाक न पढा उस ने जन्नत का रास्ता छोड दिया. (طبرانی)

जुमा'रात के दिन का इन्तिआब इरमाते ❁ कपडा पहनने, आईना देपने, पानी पीने, पाना पाने, यांद देपने और दीगर मा'भूलात में जो मस्नून हुआअें मरवी हैं उन का अेइतिमाम इरमाते ❁ नमाज की तमाम सुन्नतों और मुस्तहब्बात का पूज अेइतिमाम इरमाते ❁ जब कोई बुजुर्ग आप से मुलाकात के लिये तशरीफ लाते तो ता'जीमन षडे हो जाते ❁ सलाम में हमेशा पहल इरमाते ❁ अल्लामा बहरुद्दीन सरखिन्दी رحمه الله تعالى عليه इरमाते हैं : मुजे इल्म नहीं के कत्मी कोई शप्स सलाम में आप से सफकत ले गया (या'नी पहल करने में काम्याब हुवा) हो ❁ सर पर इमामा शरीफ सजाअे रपते ❁ पाजामा हमेशा टप्नों से ओपर हुवा करता.

(حَضْرَاتُ الْقُدْس، دفتر دُوم ص ۸۰ تا ۹۲ مُلَخَّصًا)

हजरत मुजदिदे अल्डे सानी का इमामा शरीफ

हजरते सय्यिहुना इमामे रब्बानी, मुजदिदे अल्डे सानी, शैख अहमद इझकी सरखिन्दी नकशबन्दी رحمه الله تعالى के मु-तअद्लिक मन्कूल है के इमामा शरीफ आप رحمه الله تعالى के सरे मुबारक पर होता और शम्दा दोनों कन्धों के दरमियान होता.

(ایضاً ص ۹۲ مُلَخَّصًا)

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! अहादीसे मुबा-रका में इमामा शरीफ बांधने के बहुत से इजाईल बयान किये गअे हैं : युनान्चे

बा इमामा नमाज दस हजार नेकियों के बराबर

रसूले अकरम, नूरे मुजरसम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : इमामे के साथ नमाज दस हजार नेकी के बराबर है.

(الْفُرْدُوسُ بِمَأْثُورِ الْخُطَابِ ج ۲ ص ۴۰۶ حدیث ۳۸۰)

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : મુઝ પર દુરૂદે પાક કી કસરત કરો બેશક તુમ્હારા મુઝ પર દુરૂદે પાક પઢના તુમ્હારે લિયે પાકીઝગી કા બાઈસ હૈ. (બુયલી)

કયા ઇમામા સિફ ઉ-લમા હી બાંધે ?

હઝરતે અલ્લામા મુફ્તી મુહમ્મદ વકારુદ્દીન કાદિરી ર-ઝવી رَحْمَةُ اللهِ الْكَبْرَى એક સુવાલ કે જવાબ મેં ફરમાતે હેં : ઇમામા સિફ ઉ-લમા વ મશાઈખ હી કે લિયે નહીં બલ્કે તમામ મુસલ્માનોં કે લિયે સુન્નત હૈ ઓર ઇમામે કી ફઝીલત ઓર ઇમામા બાંધ કર નમાઝ પઢને કી ફઝીલત અહાદીસ મેં બયાન કી ગઈ હૈ ઇસ લિયે હર બાલિગ મર્દ કે લિયે ઇમામા બાંધના સવાબ કા કામ હૈ ઓર અચ્છે કામ કી આદત ડાલને કે લિયે બચ્ચોં કો ભી ઇસ કી તા'લીમ દેની ચાહિયે.

(વકારુલ ફતાવા, જિ. 2, સ. 252)

આલિમ ઓર જાહિલ સબ ઇમામા બાંધે

બહુરુલ ઉલૂમ હઝરતે અલ્લામા મુફ્તી અબ્દુલ મન્નાન આ'ઝમી رَحْمَةُ اللهِ الْكَبْرَى એક સુવાલ (આમ મુસલ્માન યા'ની ગૈરે આલિમ કો ઇમામા બાંધના સુન્નત હૈ યા નહીં?) કે જવાબ મેં ઇશ્દિ ફરમાતે હેં : હર મુસલ્માન ચાહે આલિમ હો યા ગૈરે આલિમ ઉસે ઇમામા બાંધના સુન્નત હૈ, ઇમામ બૈહકી رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ને શુ-અબુલ ઇમાન મેં હઝરતે (સચ્ચિદુના) ઉબાદા બિન સામિત رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ સે રિવાયત કી, કે રસૂલુલ્લાહ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ફરમાયા કે : “ઇમામા બાંધના ઇખ્તિયાર કરો કે યેહ ફિરિશ્તોં કા નિશાન હૈ ઓર ઇસ (શમ્લે) કો પીઠ કે પીછે લટકા લો.” [شعب الإيمان ج ٥ ص ١٧٦ حديث: ١٢٦٢] “બહારે શરીઅત” મેં હૈ કે ઇમામા બાંધના સુન્નત હૈ. (બહારે શરીઅત, જિ. 3, સ. 418) ઇન અહકામ સે યેહી ઝાહિર હૈ કે મુસલ્માન ખ્વાહ આલિમ હો યા ચાહે જાહિલ સબ કો

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कजूस तरीन शप्स है. (مسند احمد)

ईमामा बांधने का हुकूम है. (इतावा बद्रुल उलूम, जि. 5, स. 411 मुलप्पसन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इतिबाअे सुन्नत घशके रसूल की अलामत

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! सख्ये आशिके रसूल की अलामत येह है के वोह अपनी जिन्दगी नबिय्ये रहमत, शफ़ीअे उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नत के मुताबिक गुजारने की कोशिश करता है, यूं सुन्नते न-बवी को अ-मली तौर पर अपनाने की वजह से आशिके सादिक का ढिल ईशके मुस्तफ़ा में तडपता है. हजरते सय्यिदुना मुजद्विदे अल्के सानी قَدَسَ سِرُّهُ النَّوْرَانِي का हर अमल सुन्नते मुस्तफ़ा की अ-मली तस्वीर हुवा करता, आप رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ अपनी गुफ़्त-गू, यलने फिरने और जिन्दगी के दीगर मा'भूलात सुन्नत के मुताबिक गुजारते, सुन्नतों की अ-र-कत से आप رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ को जो मकामो मर्तबा नसीब हुवा उस के मु-तअल्लिक आप फुद ईशाद इरमाते हैं : नबिय्ये करीम, रउकुर्रहीम رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के कमाले इत्तिबाअ (या'नी मुकम्मल पैरवी) की वजह से मुजे अैसे मकाम से सरफ़राज किया गया जो “मकामे रिजा” से भी बुलन्दो जाला है. (حَضْرَاتُ الْقُدْسِ، دَفْتَرُ نَوْمِ ص १११) सुन्नतों के मुताबिक जिन्दगी गुजारना बहुत जडी सआदत है के ईस की अ-र-कत से मकामे मलबूबियत नसीब होता है जैसा के आप رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ फुद ईशाद इरमाते हैं : “हर वोह यीज जिस में मलबूब के अफ़्लाक व आदात पाई ज़ाअें मलबूब के साथ वाबस्तगी और उस के ताबेअ होने की वजह से वोह भी मलबूब और प्यारी हो जाती है, ईस की तरफ़ ईस आयत में

✽ फरमाने मुस्तफा صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुज पर दुरेद पढो, के तुम्हारा दुरेद मुज तक पडोयता है.
(طبرانی)

ईशारा इरमाया गया है :

فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ

(٣: ٣, آل عمران: ٣١)

तर-ज-मअे क-जुल ईमान: तो मेरे इरमां
बरदार हो जाओ अद्लाह तुम्हें दोस्त
रहेगा.

लिहाजा अद्लाह तआला के थ्यारी नबी صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की पैरवी में
कोशिश करना बन्दे को मकामे मडबूबिख्यत तक ले जाता है, तो हर
अकल मन्द पर लाजिम है के अद्लाह तआला के उबीअ صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
के इत्तिबाअ में जाहिरन व बातिनन पूरी कोशिश करे.”

(مكتوبات امام ربانی، دفتر اول، حصہ سوم، مکتوب ٤١ ج ٥)

तसानीइ

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की तसानीइ में से इरसी “मकतूबाते ईमामे
रब्बानी” जियादा मशहूर हुअे. ईन के अ-रबी, उर्दू, तुर्की और अंग्रेजी
जबानों में तराजिम भी शाअेअ हो चुके हैं. आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के यार
रसाईल के नाम मुला-हजा हों : (1) ईस्बातुन्नुबुव्वह (2) रिसालअे
तइलीलियह (3) मआरिफे लदुन्नियह (4) शर्हें रुबाईयात.

मुजदिदे अल्के सानी قُدَسَ سِرُّهُ النَّوْرَانِي كِ 11 अकवाल

✽ उलाल व हराम के मुआ-मले में हमेशा बा अमल उ-लमा
से रुजूअ करना याहिये और उन के इतावा के मुताबिक अमल करना
याहिये क्यूंके नजात का जरीआ शरीअत ही है. (ایضاً، حصہ سوم، مکتوب ١٣٣ ج ٤)

✽ अहकामे शरीअत की सहीह नौईयत उ-लमाअे आभिरत से मा'लूम
कीजिये ईन के कलाम में अेक तासीर है, शायद ईन के मुबारक कलिमात

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : જો લોગ અપની મજલિસ સે અલ્લાહ કે ઝિક ઓર નબી પર દુરુદ શરીફ પઢે બિગેર ઉઠ ગએ તો વોહ બદબૂદાર મુદરિ સે ઉઠે. (شعب الایمان)

કી બ-ર-કત સે અમલ કી ભી તૌફીક મિલ જાએ. (ایضاً، حصہ دوم، مکتوب ۷۳ ص ۵۹)

❖ તમામ કાર્મો મેં ઉન બા અમલ ઉ-લમાએ કિરામ કે ફતાવા કે મુતાબિક ઝિન્દગી બસર કરની ચાહિયે જિન્હોં ને “અઝીમત” કા રાસ્તા ઈખ્તિયાર કર રખા હૈ ઓર “રુખ્સત” સે ઈજતિનાબ કરતે (યા’ની બચતે) હૈં નીઝ ઈસ કો નજાતે અ-બદી વ ઉખરવી કા ઝરીઆ વ વસીલા કરાર દેના ચાહિયે. (ایضاً، مکتوب ۷۰ ص ۵۲)

❖ નજાતે આખિરત તમામ અફઝાલ વ અક્વાલ, ઉસૂલ વ ફુરૂઅ મેં અહલે સુન્નત કી પૈરવી કરને પર મૌકૂફ હૈ. (ایضاً، مکتوب ۶۹ ص ۵۰)

❖ સરકારે દો આલમ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કા સાયા ન થા. (ایضاً، دفتر سوم، حصہ نهم، مکتوب ۱۰۰ ص ۷۰)

❖ અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ અપને ખાસ ઈલમે ગૈબ પર અપને ખાસ રસૂલોં કો મુત્તલઅ (યા’ની બા ખબર) ફરમાતા હૈ. (ایضاً، دفتر اول، حصہ پنجم، مکتوب ۳۱ ص ۱۶)

❖ હુઝૂર શાહે ખૈરુલ અનામ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કે તમામ સહાબએ કિરામ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ أجمعين કો ઝિકે ખૈર (મલાઈ) કે સાથ યાદ કરના ચાહિયે. (ایضاً، حصہ چهارم، مکتوب ۲۶ ص ۱۳)

❖ સહાબએ કિરામ عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ મેં સબ સે અફઝલ હઝરતે સય્યિદુના અબૂ બક સિદીક رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ હૈં ફિર ઈન કે બા’દ સબ સે અફઝલ સય્યિદુના ફારુકે આ’ઝમ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ હૈં, ઈન દોનોં બાતોં પર સહાબએ કિરામ ઓર તાબેઈને કિરામ عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ કા ઈજમાઅ હૈ, નીઝ ઈમામે આ’ઝમ અબૂ હનીફા વ ઈમામે શાફેઈ વ ઈમામે માલિક વ ઈમામે અહમદ બિન હમ્બલ عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ ઓર અકસર ઉ-લમાએ અહલે

કરમાને મુસ્તફા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (جمع الجوامع)

સુન્નાત કે નઝદીક હઝરતે સય્યિદુના ઉમર ફારૂક رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કે બા'દ તમામ સહાબએ કિરામ મેં સબ સે અફઝલ સય્યિદુના ઉસ્માને ગની હેં, ફિર ઈન કે બા'દ સબ સે અફઝલ સય્યિદુના મૌલા અલી (إيضاً، مکتوب ۲۶۶ ج ۱ ص ۱۲۹، ۱۳۰ ملخصاً) હેં.

❖ મજલિસે મીલાદ શરીફ મેં અગર અચ્છી આવાઝ કે સાથ કુરઆને કરીમ કી તિલાવત કી જાએ, ના'ત શરીફ ઔર સહાબા વ અહલે બૈત વ ઔલિયાએ કામિલીન رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ أَجْمَعِينَ કી મન્કબત પઢી જાએ તો ઈસ મેં ક્યા હરજ હે ! (مکتوبات امام ربانی، دفتر سوم، حصه پنجم، مکتوب ۷۲ ج ۲ ص ۱۰۷ ملخصاً)

❖ હુઝૂર તાજદારે રિસાલત صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ સે કમાલે મહબબત કી અલામત યેહ હે કે આદમી હુઝૂર صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કે દુશમનોં સે કામિલ દુશમની રખે. (إيضاً، دفتر اول، حصه سوم، مکتوب ۱۶۵ ج ۱ ص ۴۸ ملخصاً)

ગાના બજાના ઝહરે કાતિલ હે

❖ હઝરતે સય્યિદુના મુજદિદે અલ્લે સાની فِدَسِ سِرَّةِ النَّوْرَانِي ફરમાતે હેં : ગાને બજાને કી ખ્વાહિશ મત કીજિયે, ન ઈસ કી લઝ્ઝત હી પર ફિદા હોં ક્યૂંકે યેહ શહદ મિલા કાતિલ ઝહર હે. (إيضاً، دفتر سوم، حصه پنجم، مکتوب ۳۴ ج ۲ ص ۸۶ ملخصاً)

કાનોં મેં પિઘલા હુવા સીસા ડાલા જાએગા

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! ગાને બાજે સુનના સુનાના શૈતાની અફઝાલ હેં, સઆદત મન્દ મુસલ્માન ઈન ચીઝોં કે કરીબ ભી નહીં ફટકતે. ગાને બાજોં સે બચના બેહદ ઝરૂરી હે કે ઈસ કા અઝાબ કિસી સે ભી ન સહા જા સકેગા. હઝરતે સય્યિદુના અનસ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ સે રિવાયત

करमाने मुस्तफ़ा. صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुरद शरीफ़ पढो, अल्लाह उजल तुम पर रदमत भेजेगा. (ابن عدی)

है : ज़ो शप्स किसी गाने वाली के पास बैठ कर गाना सुनता है कियामत के दिन अल्लाह उजल उस के कानों में पिघला हुवा सीसा उंडेलेगा.

(جَمْعُ الْجَوَاعِبِ لِلْسُّيُوطِيِّ ج ٧ ص ٢٠٤ حديث ٢٢٨٤٣)

मनाकिजे गौसे समदानी ज ङगाने मुजद्विडे अल्के सानी

दा'वते ँस्लामी के ँशाअती ँदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 561 सङ्घात पर मुशतमिल किताब, "मल्कूजते आ'ला हज्जत" सङ्घा 422 पर है : हज्जते मुजद्विडे अल्के सानी قُدَسِ سِرُّهُ النَّوْرَانِي करमाते हैं : ज़ो कुछ कुयूओ ज-रकात का मजमअ है वोह सज सरकारे गौसियत से मिले है. يَا نُورُ الْقَمْرِ مُسْتَفَادٌ مِنْ نُورِ الشَّمْسِ. (مکتوبات امام ربّانی، دفتر سوم، حصّہ نہم، مکتوب ١٢٣ ج ٢ ص ٤٥ ملخصاً)

मुजद्विडे अल्के सानी और आ'ला हज्जत

(पांय मिलती जुलती सिफ़ात)

भीठे भीठे ँस्लामी भाँय्यो ! आ'ला हज्जत, ँमामे अहले सुन्नत, मुजद्विडे दीनो मिलत, मौलाना शाह ँमाम अहमद रज़ा पान् एकीरرحمة الرّحمن की मुबारक हयात के कँ गोशे अैसे हैं जिन में हज्जते सय्यिदुना मुजद्विडे अल्के सानी قُدَسِ سِرُّهُ النَّوْرَانِي की सीरत की जलक नज्ज आती है अल्के ता'लीमो तरबियत, दीनी जिदमात हत्ता के विसाल के मदीने में भी यकसानियत है. ँस की तङ्गील कुछ यूँ है : ﴿1﴾ हज्जते सय्यिदुना मुजद्विडे अल्के सानी और ँमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا दोनों का नाम अहमद है ﴿2﴾ दोनों जुजुर्गो ने अपने अपने वालिद से

इरमाने मुस्तफ़। صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुरदे पाक पढे बेशक तुमदारा मुज पर दुरदे पाक पढना तुमदारे गुनाहों के लिये मज्किरत है. (ابن عساکر)

ईल्मे दीन हासिल किया ﴿3﴾ दोनों हजरात की तमाम उम्र ईस्लाम के खिलाफ उठने वाले इतिहासों की सरकोषी में बसर हुई ﴿4﴾ दोनों साहिबान ने कभी भी बातिल के सामने सर नहीं लुकाया ﴿5﴾ दोनों औलियाअे किराम का विसाल स-इरुल मुजइर में हुवा.

मक्तूबाते इमामे रब्बानी और आ'ला हजरत

आ'ला हजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه ने अपने अेक मक्तूब में “मक्तूबाते इमामे रब्बानी” से अेक इरमान नकल कर के हजरते मुजद्विदे अल्हे सानी قَدَسَ سِرُّهُ النَّوْرَانِي के इरमान को ईशादे हिदायत करार दिया है, युनान्हे इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه ने अपने अेक अहले महबूबत को गुमराह लोगों की सोहबत के नुकसानात समजाते हुअे लिखते हैं : आप जैसे सूफी साफी मनिश को हजरते सय्यिदुना शैख मुजद्विदे अल्हे सानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه का अेक ईशादे याद दिलाता हूं और अैन हिदायत के इम्तिसाल (हुकम बज्ज लाने) की उम्मीद रખता हूं. इर हजरते मुजद्विदे अल्हे सानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه के मक्तूब का कलाम जिक इरमा कर ईशादे इरमाया : “मौलाना ईन्साफ़ ! आप या जैद या और अराकीन मस्लहते दीन व मजहब जियादा जानते हैं या हजरत शैखे मुजद्विदे ? मुजे हरगिज आप की ખूबियों से उम्मीद नहीं के ईस ईशादे हिदायत बुन्याद को مَعَاذَ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ लख व बातिल जानिये, और जब वोह हक है और बेशक हक है तो क्यूं न मानिये.” (मक्तूबाते इमाम अहमद रजा, स. 90 मुलख्मसन)

आसारे विसाल

हजरते सय्यिदुना मुजद्विदे अल्हे सानी قَدَسَ سِرُّهُ النَّوْرَانِي 1033

फरमाने मुस्तफ़ा : **عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْوَسْمُ** : जिस ने किताब में मुज पर दुर्रदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के विये ईस्तिगफार (या'नी बप्शिश की दूआ) करते रहेंगे. (طبرانی)

सि.छि. में सरछिन्द शरीफ़ आ कर भवत नशीन (या'नी सब से अलग थलग) हो गअे. अपने भालिक व भालिक **عَزَّوَجَلَّ** से मुलाकात की लगन ने भप्लूक से बे नियाज कर दिया. ईस भवते भास (या'नी भुसूसी तन्हाई) में सिर्फ़ यन्द अफ़राद को लुजरे (या'नी कभरे) में आने की ईजाजत थी जिन में साछिभ जादगान भ्वाजा मुहम्मद सईद और भ्वाजा मुहम्मद भा'सूम **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا**, भु-लफ़ाअे किराम में से लजरते भ्वाजा मुहम्मद छ़ाशिम क़िशमी, लजरते भ्वाजा भदरुदीन **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا** और दो अेक भ्वादिम. लजरते भ्वाजा मुहम्मद छ़ाशिम **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** विसाल (या'नी ईन्तिकाल) से कबल ही दक्कन तशरीफ़ ले गअे थे. लजरते भ्वाजा भदरुदीन **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** आभिर वक्त तक छ़ाजिर रहे. जब लजरते भ्वाजा मुहम्मद छ़ाशिम **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** रुपसत होने लगे तो लजरते सय्यिदुना मुजदिदे अल्हे सानी **قُدْسٍ سُرُّهُ النَّوْرَانِي** ने फरमाया : “दूआ करता हूं के आभिरत में लम अेक जगल जभ्भ हों.”

(رَبْنَةُ الْمَقَامَاتِ م 280 تا 282 مُخَصَّصًا)

विसाल मुबारक

28 स-फ़रुल मुजफ़्फ़र 1034 सि.छि./1624 सि.ई. को जाने अजीज अपने भालिके छ़कीकी **عَزَّوَجَلَّ** के सिपुर्द कर दी. **إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ**
(حَضْرَاتُ الْقُدْسِ، دفتر دُوم ص 208)

नमाजे जनाजा व तदफ़ीन

आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की नमाजे जनाजा आप के शहजादे लजरते भ्वाजा मुहम्मद सईद **رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَجِيد** ने पढाई. ईस के भा'द शहजादअे

﴿رَمَانَهُ مُسْتَقْبَلًا﴾ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर अेक दिन में 50 बार दुरेद पाक पढे क्रियामत के दिन में उस से मुसा-कहा कइं (या'नी हाथ मिलावै)गा. (ابن بشكوال)

मर्हूम हजरते प्वाजा मुहम्मद सादिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزَّاقِ के पडलू में दफन कर दिया गया. येह वोडी मकाम था जहां हजरते सय्यिदुना मुजदिदे अल्के सानी سُرَّةُ النَّوْرَانِي ने अपनी जिन्दगी में अेक नूर देखा था और वसियत फरमाई थी : “मेरी कब्र मेरे बेटे की कब्र के सामने बनाना के मैं वहां जन्नत की क्यारियों में से अेक क्यारी देष रहा हूं.” ईस कुबे (या'नी गुम्बद) में पडले शहजादअे मर्हूम हजरते प्वाजा मुहम्मद सादिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزَّاقِ 1025 सि.हि. की तदफीन हुई और ईस के बा'द हजरते सय्यिदुना मुजदिदे अल्के सानी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को उन के पडलू में दफन क्रिया गया. अब ईस रौजे शरीफ को दोबारा ता'मीर क्रिया गया है.

(رَبْدَةُ الْمَقَامَاتِ ص २१६-२१७ ३०० مُلَخَّصًا)

औलाद के मुबारक नाम

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के सात शहजादे और तीन शहजादियां थीं जिन की तर्फसील येह है : शहजादगान : ﴿1﴾ हजरते प्वाजा मुहम्मद सादिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزَّاقِ ﴿2﴾ हजरते प्वाजा मुहम्मद सईद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ﴿3﴾ हजरते प्वाजा मुहम्मद मा'सूम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ﴿4﴾ हजरते प्वाजा मुहम्मद फरुख رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ﴿5﴾ हजरते प्वाजा मुहम्मद ईसा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ﴿6﴾ हजरते प्वाजा मुहम्मद अशरफ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ शहजादियां : ﴿1﴾ बीबी रुकय्या رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا ﴿2﴾ बीबी अदीजा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا बीबी उम्मे رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا कुलसूम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا ﴿3﴾

(رَبْدَةُ الْمَقَامَاتِ)

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : ابروئے كيامت لوگوں مے سے مبرے كرىب तर वोड डोगा जिस ने दुन्या में मुज पर जियादा दुवदे पाक पढे होंगे. (ترمذی)

પુ-લફાએ કિરામ

હઝરતે સચ્ચિદુના મુજદિદે અલ્ફે સાની **قَدَسِ سِرُّهُ النَّوْرَانِي** કે ચન્દ પુ-લફાએ કિરામ કે નામ યેહ હૈં : (1) સાહિબ ઝાદા ખ્વાજા મુહમ્મદ સાદિક (2) સાહિબ ઝાદા ખ્વાજા મુહમ્મદ સઈદ (3) સાહિબ ઝાદા ખ્વાજા મુહમ્મદ મા'સૂમ (4) હઝરત મીર મુહમ્મદ નો'માન બુરહાન પૂરી (5) શૈખ મુહમ્મદ તાહિર લાહોરી (6) શૈખ કરીમુદીન બાબા હસન અબ્દાલી (7) ખ્વાજા સચ્ચિદ આદમ બન્નોરી (8) શૈખ નૂર મુહમ્મદ પટની (9) શૈખ બદીઉદીન (10) શૈખ તાહિર બદખ્શી (11) શૈખ યાર મુહમ્મદ કદીમ તા-લકાની (12) હઝરત અબ્દુલ હાદી બદાયૂની (13) ખ્વાજા મુહમ્મદ હાશિમ કિશમી (14) શૈખ બદરુદીન સરહિન્દી **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى**. (حَضْرَاتُ الْقُدْسِ)

મુજદિદે અલ્ફે સાની ઔર પુ-લફાએ આ'લા હઝરત

આ'લા હઝરત **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** કે એક ખલીફા ઈમામુલ મુહદિસીન હઝરતે સચ્ચિદુના મુહમ્મદ દીદાર અલી શાહ અલ્વરી **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ભી નકશબન્દી મુજદિદી હૈં. આ'લા હઝરત **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** કે પુ-લફા કો ભી હઝરતે સચ્ચિદુના મુજદિદે અલ્ફે સાની **قَدَسِ سِرُّهُ النَّوْرَانِي** સે બે પનાહ અકીદતો મહબ્બત થી, સચ્ચિદી કુત્બે મદીના હઝરત કિબ્લા ઝિયાઉદીન અહમદ મ-દની **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ને એક મર્તબા સર પર દોનોં હાથ રખ કર ઈશદિ ફરમાયા : “હઝરતે મુજદિદે અલ્ફે સાની **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** તો હમારે સર કે તાજ હૈં.” (સચ્ચિદી ઝિયાઉદીન અહમદ અલ કાદિરી, જિ. 1, સ. 509 મુલખ્ખસન) ખલીફાએ આ'લા હઝરત સચ્ચિદુના અબુલ બ-રકાત સચ્ચિદ અહમદ કાદિરી **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ને હઝરતે સચ્ચિદુના મુજદિદે અલ્ફે સાની **قَدَسِ سِرُّهُ النَّوْرَانِي** કે “40 ઈશદાત” જમ્મ ફરમાએ હૈં.

करमाने मुस्तफ़ा ﷺ: شَبِيهِ جُمُوعًا وَأَوْرَ رَوْحِ جُمُوعًا مُؤْجًا بِرِ دُرِّدُودِ كِي كसरत कर वलिया करो ज़े अेसा करेगा डिआमत के दिन में उस का शकीअ व गवाड बनूंगा. (شعب الایمان)

ईडरिस

उन्वान	स.	उन्वान	स.
100 डजतेंपूरी डोंगी	1	मज्किरत की बिशारत	16
विलादते बा सआदत	1	सवाब का तोडफ़ा (डिकायत)	16
कल्ले की ता'भीर और पांयवें		डिकायत से डसिल डोने वाले म-दनी कूल	17
जदे अमजद की अ-र-कत (डिकायत)	2	डजार डाने वाली तस्बीड	18
वालिडे माजिद का मकाम	3	बीबी आर्रशा के र्रसाले सवाब की डिकायत	18
ता'लीमो तरबियत	4	तमाम औरतों में सब से थ्यारी बीबी आर्रशा	19
ज्राडिल सूडी शैतान का मस्परा	5	वली वली को पडथानता डै (डिकायत)	20
बेटा डो तो अेसा !	6	सरडिन्द शरीफ़ के नव डुर्रुफ़ की निसबत से 9 करामात	21
बाप डेभे औलाद सवाब कमाअे	7	﴿1﴾ अेक वकत में दस घरों में	
मुजद्विडे अल्ले सानी का डुल्युा मुबारक	7	तशरीफ़ आ-वरी (डिकायत)	21
सुन्तते निकाड	8	﴿2﴾ डौरन बारिश अन्द डो गर्र (डिकायत)	21
मुजद्विडे अल्ले सानी ड-नडी डें	8	﴿3﴾ र्रसे डथी के पाडतले कुयल्ला डिया ज़अे (डिकायत)	21
शाने र्रमामे आ'जम		﴿4﴾ अय्ये के बारे में गैबी अबर डी (डिकायत)	22
अ ज़बाने मुजद्विडे अल्ले सानी	9	﴿5﴾ डिल की आत ज़ान ली ! (डिकायत)	23
र्रजज़त व अिलाक़त	9	﴿6﴾ मांग क्य़ा मांगता डै ? (डिकायत)	23
पीरो मुश्रीद का अ-दभो अेडतिराम (डिकायत)	10	﴿7﴾ मुरीद की मदद करमा र्र (डिकायत)	24
मज़ार शरीफ़ पर डज़िरी	11	﴿8﴾ अद अकी-दगी का प्वाअ में	
नेकी की दा'वत का आगाज़	11	र्रलाज करमा डिया (डिकायत)	24
र्रमाम गज़ाली के गुस्ताअ को डंडा (डिकायत)	12	﴿9﴾ अपनी वक़ात की पडले डी	
गुस्ताअ का र्रअ़तनाक अन्ज़ाम (डिकायत)	13	अबर डे डी (डिकायत)	26
शौके तिलावत	14	मिडी का कोना टूटा डुवा पियाला (डिकायत)	26
सुन्त पर अमल का र्रन्आम (डिकायत)	14	सादा कागज़ का भी अदअ	27
सोने, ज़गने के 5 म-दनी कूल	15	राड यलते डुअे कागज़ात को लात मत मारिये	28

करमाने मुस्तफ़। صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर अेक बार दुरद पढता हे अल्लाह उस के लिये अेक किरात अज लिखता हे और किरात उछुट पलाड जितना हे. (عبدالرزاق)

उन्वान	स.	उन्वान	स.
दुरद की ता'जीम की जअे	28	कानों में पिघला हुआ सीसा डाला जायेगा	38
जवानी केसे गुजारें ?	29	मनाकिबे गौसे समदानी	
जवानी ने'मते पुदावन्दी	29	ब जवाने मुजदिदे अल्के सानी	39
हाकिजे कुरआन का अदब	30	मुजदिदे अल्के सानी और आ'ला हजरत	
मुजदिदे अल्के सानी के 40 मा'भूलात	31	(पांच मिलती जुलती सिफ़ात)	39
हजरत मुजदिदे अल्के सानी का एमामा शरीफ़	33	मकतूबाते एमामे रब्बानी और आ'ला हजरत	40
बा एमामा नमाज हस हजारे नेकियों के बराबर	33	आसारे विसाल	40
क्या एमामा सिर्फ़ उ -लमा ही बांधें ?	34	विसाल मुबारक	41
आलिम और ज़ाहिल सब एमामा बांधें	34	नमाजे जनाजा व तदफ़ीन	41
एतिबाअे सुन्नत एशके रसूल की अलामत	35	औलाद के मुबारक नाम	42
तसानीफ़	36	पु-लफ़ाअे किराम	43
मुजदिदे अल्के सानी के 11 अक़वाल	36	मुजदिदे अल्के सानी और	
गाना बजाना जहरे कातिल हे	38	पु-लफ़ाअे आ'ला हजरत	43

येह रिसाला पठ कर दूसरे को दे दीजिये

शाही गमी की तकरीबात, एजतिमाआत, आ'रास और जुलूसे मीलाद वगैरा में मक-त-भतुल मदीना के शाअेअ कर्दा रसाएल और म-दनी इलाह पर मुशतमिल पेम्फ़लेट तकसीम कर के सवाब कमाएये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाएल रफ़ने का मा'भूल बनाएये, अज्बार इरोशों या बज्जों के जरीअे अपने महल्ले के घरों में हजरे तौफ़ीक़ रिसाले या म-दनी इलाह का पेम्फ़लेट हर माह पछोंया कर नेकी की दा'वत की धूमें मयाएये और जूब सवाब कमाएये.